बधिरांधता: एक परिचय

सेन्स इंटरनेशनल इंडिया

संपूर्ण भारत में बधिरांधजनों के साथ कार्यरत

बधिरांधता: एक परिचय

बधिरांधता: एक परिचय

बधिरांधता दृष्टि एवं श्रवण अक्षमताओं का मेल है जो कि अल्प से गंभीर किस्मों की हो सकती है आम तौर पर इसका तात्पर्य देखने व सुनने की क्षमताओं के पूरे अभाव से लगाया जाता है, जबकि वास्तविकता में बधिरांधता एक ऐसी स्थिति है जिसमें ऐसी दृष्टि व श्रवण अक्षमताएं होती हैं कि इनके कारण वर्तन की एवं अन्य विकासात्मक तथा बौधात्मक समस्याएं इतनी गंभीर हो जाती है कि बधिरांध व्यक्ति दृष्टि या श्रवण या अन्य विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए निर्धारित शिक्षण कार्यक्रमों में उस समय तक सम्मिलित नहीं हो पाता, जब तक कि उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पूरक उपाय न किए जाएं। बधिरांध बच्चें शैक्षिक रूप से अलग-अलग पड़ जाते हैं, क्योंकि इन्हें अपनी क्षमताओं के अधिकतम स्तर तक पहुंचाने के लिए विशिष्ट शैक्षिक तकनीक की आवश्यकता होती है।

एक बधिरांध बच्चे के लिए दुनियां बहुत ही संकुचित होती है। यदि बच्चा गंभीर रूपसे बधिर व

पूर्ण दृष्टि हीन है, तो उसके दुनिया की परिधि वहीं तक होती है, जहां तक उसके हाथ फैलते है ऐसे बच्चों से अगर स्पर्श द्वारा अंतक्रिया न की जाएं तो वे बिल्कुल एकाकी महसूस करते हैं। उनके लिए दुनियां की अवधारणा इस बात निर्भर है कि वे क्या और किसे स्पर्श द्वारा जान पाते हैं।

यदि किसी बधिरांध बच्चे में उपयोग कर सकने योग्य बची हुई श्रवण अथवा दृष्टि क्षमता है (जैसा कि बहुत बच्चों के पास होती है), तो उसके लिए दुनियां थोड़ी विस्तृत हो जाती है। बहुत से बधिरांध बच्चों में अपने आस-पास के वातावरण में चल-फिर सकने, अपने परिजनों को पहचान सकने, संकेतों को निकट से देख सकने व बड़े अक्षरों को पढ़ सकने हेतु पर्याप्त दृष्टि क्षमता होती है। अन्य बधिरांध बच्चों में परिचित ध्वनियों को सुन सकने, कुछ शब्दों को समझ सकने व स्वयं कुछ बोल सकने की क्षमता होती है। बधिरांधता में ऐन्द्रिय अक्षमताओं के अनेक स्तर हो सकते है।

सांख्यिकीय निरूपण:

जहां तक कि इस प्रगतिशील संसार की बात है, इसमें प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य एवं शिक्षा प्रदान करने के पर्याप्त संसाधन मौजूद नहीं हैं। विकलांग व्यक्ति,

विशेषतः बधिरांध व्यक्ति के लिए जन-चेतना के अभाव के कारण इन संसाधनों तक पहुंच मुश्किल है। कई देशों में, ऐसे लोगों की जनसंख्या जानने के लिए गणनाएं हुई है, जिसमें हम यह मान सकते है कि यह संख्या बहुत अधिक है लेकिन

कहा नहीं जा सकता कि इनकी वास्तविक संख्या कितनी है, कहां है और किन स्थितियों में है। भारत में यद्‌यपि इनकी संख्या जानने के लिए प्रयास नहीं हुए, फिर भी सामुदायिक पुनर्वास परियोजनाओं के लिए हुए सर्वेक्षणों से इनकी (बहु-विकलांग व्यक्तियों संख्या ४,५०,००० तक होने का अनुमान है।

बधिरांधता के मुख्य कारण:

विकसित देशों में इसका मुख्य कारण मां को गर्भावस्था में होने वाली रूबेला

बीमारी (Rubella/German Measels) को माना गया है। कुछ अन्य कारण निम्नवत है -

लक्षण - समूह:

(१) गर्भावस्था के दौरान:

गर्भावस्था के दौरान मां को एड्स, रूबेला, हरपिस या सिफिलिस आदि बीमारियां होने के कारण भी बच्चा बधिरांध हो सकता है। विकासशील देशों में अधिकांश बधिरांधता एवं बहुविकलांगता का सीधा संबंध, सुबेला (German Measels) से है।

(२) जन्मोपरान्त बधिरांधता कारण:

एस्फिक्सियां - जन्म के तुरन्त बाद बच्चे द्वारा साँस न ले पाना

सिर में चोट या दुर्घटना होना

मिर्गी आना या दौरे पड़ना

एन्सीफेलाइटिस - मस्तिष्क ज्वर होना

मेनिन्जाइटिस - मस्तिष्क अथवा मेरूरज्जु की तंत्रिकाओं में सूजन होना ।

(३) अशर: (Usher)

यह एक वंशानुगत कारण है जो श्रवण व दृष्टि को बाधित करता है। श्रवण अक्षमता गंभीर किस्म की होने के कारण जन्म से ही परिलक्षित लगती है जबकि

दृष्टि की क्षति १६-१९ वर्ष की आयु तक में भी हो सकती है। प्रारंभिक तौर पर रेटिनाइटिस पिग्मेण्टोसा ये रतौंधी और गुहा दृष्टि Tunnel Vision (दृष्टि क्षेत्र में अत्याधिक ह्रास) के रूप में दृष्टि -क्षमता प्रभावित होती है, जबकि श्रवण क्षति का स्तर आम तौर पर एक जैसा ही बना रहता है। अशर समूह के तीन प्रकार है: प्रथम प्रकार - जन्म से ही गंभीर श्रवण क्षति, खराब संतुलन और १० वर्ष की आयु के पहले ही रेटिनाइटिस पिग्मेण्टोसा की शुरूआत होना, द्वितीय प्रकार आंशिक से लगभग गंभीर श्रवण क्षति जन्म से, सामान्य संतुलन और रेटिनाइटिस पिग्मेण्टोसा २० वर्ष की आयु मे परिलक्षिति होना, तृतीय प्रकार जन्म के समय श्रवण एवं दृष्टि क्षमता सामान्य तथा रेटिनाइटिस पिग्मेण्टोसा के परिलक्षित होने के समय एक आंशिक से मध्यम श्रवण क्षति, श्रवण क्षति एवं रेटिनाइटिस पिग्मेण्टोसा युवावस्था तक बढ़ते जाते है।

(४) अवधि पूर्व जन्म के कारण:

७ माह की गर्भावस्था अवधि पूर्ण होने के पहले ही यदि बच्चा जन्म ले लेता है, तो उस कृत्रिम ओक्सिजन देने की आवशष्ठयक ता होती है। बच्चे द्वारा अधिक या कम ऑक्सिजन लेने के कारण बधिरांधता आ जाती है।

कुछ व्यक्ति जन्म से ही बधिरांध होते हैं। कुछ व्यक्ति जन्म से बधिर या श्रवण-ह्यस वाले होते है और बाद में दृष्टि बाधित हो जाते हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है जो जन्म से दृष्टि बाधित होते है और बाद में बधिर या श्रवण-ह्यस वाले हो जाते हैं, किन्तु कुछ व्यक्ति दुर्घटनावश भी बधिरांध हो जाते हैं वे जन्म से दृष्टि एवं श्रवण क्षमता में सामान्य होते है पर बाद में दुर्घटना या बीमारी के कारण उनकी दोनों (या अन्य भी) इन्द्रियां क्षतिग्रस्त हो जाती है।

बधिरांधता के साथ अक्सर अन्य अक्षमताएं भी जुड़ी होती है। रूबेला जैसे कारक हृदय व मस्तिष्क को भी क्षति पहुंचा सकते है। कुछ अन्य कारक बधिरांधता के साथ ही (विकास-मंदता) मंद गति से विकास या अन्य शारीरिक अक्षमताओं को भी जन्म देते हैं।

बधिरांधता व्यक्ति की आवश्यकताएं:

जैसा कि हम जानते हैं कि जो कुछ हम सीखते है, उसकी ९५ % सूचना (ज्ञान) हमें आंख व कान से ही मिलती है, अतः बधिरांधता-वर्तन चलायमानता व सूचना (ज्ञान) प्राप्त करने में अनोखी समस्याएं पैदा करती है। एक बधिरांध व्यक्ति

अपनी बची हुई क्षमताओं का उपयोग करके अपने वातावरण की सूचना प्राप्त करता है। यदि ऐसे व्यक्ति की क्षमताएं बहुत कम हो और उसके आस-पास रहने वाले लोगों ने उसके द्वद्वार समझी जा सकने वाली अंर्तकिया-पद्धति न अपना रखी हो, तो ऐसे में उस व्यक्ति की समस्याएं बहुत जटिल हो जाती है। ऐसे व्यक्ति में सामान्य रूप से व्यवहारात्मक व संवेदनात्मक समत्याएं जन्म ले लेती है।

देख व सुन सकने की क्षमता वाले व्यक्ति को आम तौर पर इन इन्द्रियों से प्राप्त होने वाली सूचनाएं बिना प्रयास किए मिलती रहती हैं। किसी अन्य व्यक्ति का निकट आना, भोजन का समय होना, बाहर जाने का निर्णय, दिनचर्या में कोई भी परिवर्तन आदि छोटी-छोटी बातों का संकेत ध्वनि या दृश्य माध्यमों से मिलता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति स्वयं को तैयार करता है। कोई व्यक्ति जिसका सुनने व देखना की क्षमता बाधित हो, इन संकेतों को ग्रहण नहीं कर पाता। उसके लिए यह दुनिया एक अनिश्चित और भयावह जगह प्रतीत होने लगती है। बहुत हद तक ऐसे व्यक्ति दुनिया को सुरक्षित और सरल समझने के लिए अपने आसपास के लोगों की सद्-इच्छा व संदेनशीलता पर निर्भर होते हैं।

बधिरांध बच्चे के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, उसकी भाषा का विकास

होना। यह एक बड़ा अवसर भी है, क्योंकि भाषा के द्वारा ही वे अपनी इच्छाएं, आवश्यकताएं व विचार व्यक्त कर सकते हैं। भाषा विकास हो जाने से बधिरांध बच्चा अपनी बात को व्यक्त कर सकता है व पुस्तकों व नित विकसित होने इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों का उपयोग कर सकता है। इससे उसके आसपास तक ही सिमटी हुई दुनिया व्यापक होने लगती है। भाषा सीखने के लिए ऐसे बच्चे दूसरे ऐसे लोगों पर निर्भर हैं जो कि उनके साथ अंर्तक्रिया करते हैं। ऐसै लोगों के सहयोग से बधिरांध बाच्चे अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग करके दूसरों से अर्तक्रिया करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

बधिरांध व्यक्ति के लिए अपने वातावरण में स्वतंत्र रूप से बिना सहयोग के चल-फिर सकना दूसरी मुख्य समस्या है। वातावरण में चल-फिर सकने की स्वतंत्रता, व्यक्ति की विकलांगता की गंभीरता पर, साथ ही बचपन से उसे मिलने वाली शिक्षा पर, निर्भर है। यह इस बात पर भी विशेष रूप से निर्भर है कि उसने दूसरों के साथ अंर्तक्रिया करने के लिए कितना और ऐसा वर्तन विकसित किया है।

बधिरांध व्यक्ति के परिवार, शिक्षक व अभिभावक की आवश्यताऐं

वर्तन:

बधिरांधता की समस्या, ऐसे व्यक्ति के परिवार, शिक्षक व अभिभावकों के सम्मुख गंभीर चुनौतियां पेश करती है इन्हें यह प्रयास करना आवश्यक होता है कि बधिरांध व्यक्ति, दुनियां की व्यापकता को समझ सके, यही पारिवारिक परिचय एक ऐसा विषय बन सकता है जिस पर वार्तालाप शुरू किया जा सकें। ऐसे संवाद (वार्तालाप) माता-पिता और एक दृष्टि वान या श्रवण क्षमता वाले बच्चे के बीच सिर्फ आंखों के इशारें और भाव भंगिमाओं (जैसे सिर हिलाना, ध्वनियों का आदान-प्रदान और चेहने के भाव) से स्थापित किए जा सकते है। किन्तु ऐसे बच्चे जिनमें स्पर्श द्वारा ही यह जाना जा सकता है कि उसके साथ वाला व्यक्ति उसकी क्रियाओं पर ध्यान दे रहा है या नहीं। उदाहरणार्थ ऐसे बच्चों का शिक्षक, बच्चे के साथ हाथ में कोई उसकी पसंदीदा वस्तु लेकर बच्चे की मनचाही दिशा में ले जाए

अथवा मां बच्चे की किसी किया की नकल करें और बच्चा स्पर्श द्वारा उस नकल को जान जाए। इस तरह की पारस्परिक अंर्तक्रियाओं द्वारा वार्तालाप का रास्ता खुल सकता है ।

शिक्षक या माता-पिता को बधिरांध बच्चें के साथ वार्तालाप शुरू करने के लिए बच्चें के साथ प्रारंभिक संवाद सम्बन्ध स्थापन के बाद थोड़ा रूकना चाहिए । ऐसे बच्चें बहुत धीमी गति से प्रतिक्रिया करते है। सफल वार्तालाप करने के लिए बच्चें को प्रतिक्रिया हेतु पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए । बच्चें को प्रतिक्रिया के लिए समय देना फिर प्रत्युत्तर देना तथा फिर बच्चें को प्रतिक्रिया के लिए समय देना - इस प्रकार वार्तालाप शुरू हो सकता है।

चूंकि बधिरांध बच्चें को दूसरों के साथ अशाब्दिक संवाद करने में आसानी हो जाती है। अतः वह अंर्तक्रियाओं के लिए संकेतों को समझने के लिए तैयार हो जाता है। कभी-कभी यह आवश्यक होता है कि शब्दों के प्रयोग से पहले साधारण संकेतों या वस्तुओं के माध्यम से बच्चों से वर्तन शुरू किया जाये। ये संकेत या

वस्तुएं, कोई कार्य करने के प्रतीक हो सकती है। ऐसा करने से बच्चा एक संकेत या वस्तु का दूसरे कार्य/क्रिया से तालमेल समझने लगेगा ।

ऐसे हजारों शब्द है जो बच्चे बोलने से पहले सुनते रहते है। बधिरांध बच्चों को ऐसे शब्दों के साथ संकेतों/उद्दीपनों की आवश्यकता होती है जो उसके लिए अर्थपूर्ण हो । माता-पिता, शिक्षकों अथवा अभिभावकों के लिए यह एक चुनौती है कि वह बधिरांध बच्चे को ऐसा माहौल दे सकें जिसमें उसके लिए वर्तन योग्य माहौल बना सकते है। ये टिप्पणियां बच्चे के क्रियाकलापों पर लगातार बच्चे के साथ वार्ता की अंर्तक्रिया के दौरान की जा सकती है। उदाहरणार्थ जब बच्चा व शिक्षक दोनों किसी वस्तु को स्पर्श कर रहे हों या पकड़ रखे हों, उस समय शिक्षक संकेत या शब्द द्वारा उस वस्तु या क्रिया का नाम कई-कई बार बताने से बधिरांध बच्चे को शब्द या संकेत और वस्तु के बीज सम्बान्ध बनाने का अवसर मिलेगा ।

बधिरांध व्यक्ति के लिए मुख्य वर्तन पद्धति

१. स्पर्श २. वस्तु संकेत ३. सांकेतिक भाषा

४. हावभाव ५. चित्र संकेत ६. हाँथ पर लिखकर

७. टैडोमा पद्धति ८. चित्र संकेत ९. ब्रेल

१०. लिपि - रिडींग

एक बधिरांध बच्चे को शाब्दिक व आशाब्दिक वार्तालाप के साथ ही सर्थिक क्रियाकलापों की एक विश्वसनीय पद्धति की आवश्यकता होती हैं जो किसी अथवा किन्हीं प्रकारों में उसके

बताना पड़ता हैं । स्पर्श, हावभाव और प्रतीक-संकेत का प्रयोग एसे ही कुछ प्रकार है जिनसे बच्चे को यह बताया जा सकता है की क्या होने वाला

है। जब कभी बच्चें को उठाना हो तो शिक्षक उसे उसके हाथों के नीचे हल्का सा उठाएगा, फिर बच्चे को उठने के लिए तैयार होने का समय देगा। इस प्रकार की क्रमबद्धता बच्चे को स्वयं सुरक्षित महसूस करने व दुनियां को समझने-जानने का अवसर देगी, जिससे कि उसमें जिज्ञासाएं पैदा हो ।

चलिष्णुता (Orientation & Mobility):

जीवन में अन्य विकासों के साथ ही बधिरांध बच्चे को चल-फिर सकने में मदद की आवश्यकता होगी। बिना दृष्टि के, या कम दृष्टि के साथ, उसे न केवल आसपास की जानकारी प्राप्त करना मुश्किल होगा, अपितु अपने बिल्कुल नजदीकी जगह में भी चलने का उत्साह नहीं रहेगा। बधिरांध बच्चे द्वारा सहज रूप से कोई गति करने पर उसे प्रोत्साहित करने से उसमें गतिशीलता की भावना को बल मिलेगा। इस तरह से बच्चे को चलिष्णुता सिखाने की शुरूआत हो सकती है।

चलिष्णुता विशेषज्ञ, बधिरांध बच्चे के लिये सुरक्षित व उत्साहपूर्वक वातावरण तैयार करने में माता-पिता अथवा शिक्षक की मदद कर सकते हैं। कुछ बधिरांध बच्चों को शारीरिक व स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकती है। ऐसे बच्चों के लिए चलने-फिरने का उचित और सुरक्षित वातावरण तैयार करने में भौतिक चिकित्सकों (Physio-therapist), नेत्र विशेषज्ञों, स्वास्थ्य कर्मियों तथा चलिष्णुता विशेषज्ञो का सहयोग लेना चाहिये ।

शैक्षिक आवश्यकताएं:

बधिरांध व्यक्ति या बच्चे को बहुत विशिष्ट व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यकम की जरूरत होती है। ऐसे बच्चे को सीमित क्षमताओं के कारण एक ऐसे संरचनात्मक शैक्षिक कार्यक्रम की आवश्यकता होती है जो कि उसके सीखने के तरीकों पर आधारित हो (जिससे कि बच्चे को सीखने में आसानी हो)। मूल्यांकन की प्रकिया प्रत्येक चरण पर की जानी चाहिये अनुभवी शिक्षक भी कभी ऐसे बच्चे की क्षमता का निम्न-निर्धारण अथवा अति-निर्धारण करके गलत शैक्षिक कार्यकम बना सकते है। अतः सावधानी बरतना आवश्यक है।

हेलन केलर ने कहा था कि दृष्टि हीनता, व्यक्ति को वस्तुओं से अलग करती है जबकि श्रवणहीनता उसे लोगों से अलग कर देती है। इललिए बधिरांध बच्चों के कार्यक्रम निर्धारण में सभी इन्द्रियों को ध्यान में रखना पड़ा है। दृष्टि हीनता और श्रवणहीनता के फलस्वरूप बच्चों में कई द्वीतीचक विकलांगताएं भी सिर उठाने लगती है। इन परिस्थितियों में सर्व-इन्द्रिय आधारित पाठ्यक्रम सर्वाधिक असरकारक होता है। ऐसा करने से बधिरांध बच्चे या व्यक्ति की क्षमताओं का सही विकास होता है और वह अपने वातावरण का सार्थक ज्ञान प्राप्त कर पाता है। जितनी शीघ्र सेवायें बच्चों को मिलना जरूरी होगी, उसके लिए उतना ही बेहतर होगा।

पारिवारिक आवश्यकताएं:

परिवार में सम्मिलीकरण का विषय स्पष्ट है कि बधिरांध बच्चे के माता-पिता, अभिभावकों व शिक्षकों के लिए तमाम समस्याएं लिए हुए हैं। इनमें से एक हे ऐसे बच्चे का पिरवार तथा समुदाय में सम्मिलीकरण । चूंकि ऐसा बच्चा स्वाभाविक तरीके से व्यवहार/प्रतिक्रिया नहीं करता, इसलिये उसको पारिवारिक क्रियाकलापों में शामिल कर पाना माता-पिता के लिए एक चुनौती होता है। जौ बच्चा देख पाता है, उसके माता-पिता उसको मुस्कराकर या नजरें मिलाकर प्रोत्साहित/पुरस्कृत करते हैं।

बधिरांध बच्चे के लिये प्रोत्साहन के अन्य तरीकों की आवश्यकता होती है उदाहरणार्थ हाथ बढ़ाना या शारीरिक गतिविधि करना ऐसे बच्चे का प्रसन्नता या सर्प जाहिर करने का तरीका हो सकता है। बच्चे की विकास की गति के प्रति भी माता-पिता को अपना नजरिया बदलना चाहिये। उन्हें बच्चे द्वारा कोई नया संकेत करना सीखने, दूध पीना सीखने या अभिवादन का प्रत्युत्तर देना सीखने पर प्रसन्न होना चाहिये, जैसा कि अन्य बच्चों की सफलता पर वे होते हैं। इस तरह बच्चे के प्रति उनकी अपेक्षाएं व सोच में सकारात्मक परिवर्तन होगा ।

एक विकलांग बच्चा पैदा होने पर माता-पिता का शोक संतप्त होना स्वाभाविक है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए भी सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता होती है। माता-पिता के समूह व अन्य संसाधनों से बधिरांध बच्चे के विकास में उनके लिए कार्य करने वालों को मदद मिल सकती है। ऐसी मदद से बधिरांध बच्चे को परिवार एवं समुदाय में सम्मिलीकरण करने में बल मिलेगा।

भविष्य की आवश्यकताएं:

जब किसी बधिरांध व्यक्ति का प्रशिक्षण/शिक्षण समाप्त होहात है, तो उसके लिए स्थिति परिवर्तन व पुनर्वास योजना की आवश्यकता होगी जिससे कि एक व्यस्क व्यक्ति के तौर पर उसे अनुकूल कार्य वातावरण मिल सके। चूंकि बधिरांध व्यक्ति की आवश्यकताएं विविध होती है, अतः इनके लिए किसी एक व्यक्ति या संस्था द्वारा सेवा देना पाना मुश्किल है। उचित और गंभीर सामूहिक प्रयास, जो कि विभिन्न विशेषज्ञों व संस्थाओं द्वारा ही

हो सकता है, द्वारा ही इनके आवास, व्यवसाय, पुनर्वास आवश्यकताएं चिकित्सकीय व स्वास्थ्य समस्याओं का हल हो सकता है।

ऐसे पुनर्वास का केन्द्र बिन्दु बधिरांध व्यक्ति ही होना चाहिए उसका लक्ष्य, दिशा, रूचियां व क्षमताओं इन सभी को ध्यान में रखकर ही योजना बनानी चाहिए । और इस कार्य में कुशल कार्यकर्ता परिवार और उसके निकट के लोग बहुत उपयोगी साबित हो सकते है ।

उपसंहार:

बधिरांध व्यक्ति की समस्याएं कठिन होने के बावजूद भी इनको हलकर पाना असंभव नहीं है। ऐसे बहुत से व्यक्तियों ने जीवन में बहुत सफलताएं प्राप्त की है। बधिरांध व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास एवं प्रभावी पुनर्वास के लिए यह आवश्यक है कि इनके साथ कार्य करने वाले व्यक्ति और परिजनों को बहले बधिरांध बच्चे के अनुभवों को समझना होगा और फिर इनसे पारस्परिक संबंध स्थापित करने के बाद अंर्तकिया द्वारा उन्हें सामान्य जीवन / सामुदायिक जीवन में सम्मिलित करने का प्रयसा करना होगा ।

हिन्दी अनुवाद: सौरभ श्रीवास्तव, शिक्षित युवा सेवा समिति, बस्ती (उ.प्र.)

बधिरांधता से सबंधीत सूचना एवं रीसर्च युनीट

सेन्स ईन्टरनेशनल (भारत)

समग्र देश मे बधिरांध व्यक्तिओ के साथ कार्यरत संस्था

रॉ-हाउस नं ई-२, तरुणनगर रॉ हाउसीस,

विभाग-२, गुरुकुल रोड,

अहमदाबाद ३८००५२

ई-मेल: info@senseintindia.org

हमारी वेबसाईट की मुलाकात ले.

www.senseintindia.org

ब्रिटिश डेप्यूटी हाईकमीशन के सौजन्य से, मुंबई